''और तक़्वे का पहनावा ही अच्छा भला है।''

(सूर–ए–आराफ़)

घर और समाज में ख़ुदा का डर (तक़्वा)

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

असल तक़्वे की पहचान

दीनी बुज़ुर्ग, महान धर्मात्माओं ने क़ुर्आन मजीद की आयतों और रिवायतों की रौशनी में तक़्वे वालों की पहचान नीचे लिखे मसलों में महसूस की हैं:–

☐ एक बालिग़ (व्यस्क) और समझदार आदमी दीन–शरीअत (धर्म विधान) की जानकारी इस हद तक पाये जितनी आमाल (कर्म), चाल–चलन, बर्ताव और घर व समाज से जुड़े रहने के लिए ज़रूरी महसूस होती है।

☐ जिस्म को ठीक रखने के उसूलों (Hygeine) से बदन की हिफ़ाज़त और खाने–पीने के अदब तमीज़ (शिष्टाचार) का लेहाज़ करना।

☐ ज़िन्दगी से जुड़े मुद्दों, समझदारी, तेज़ी व होशियारी, ज़िन्दगी के हर मैदान में ईमानदारी बरतना, मन की पाकी की हिफ़ाज़त, सच बोलना, अच्छे आचरण, नीच बातों से पाक होना, दोग़ली चाल और दिखावेपन से अलग रहना, फ़ज़ूल यानी ज़ियादती की चीज़ों की बढ़मार से अलग–थलग रहना, बेईमानी, खोट, मक्कारी से पाक होना, आलिमों, विद्वानों की इज़्ज़त करना, दीन के वाजिब और सुन्नत कामों को करना, दीनी आलिमों, धर्मगुरुओं से जुड़े रहना, जो आदमी को ख़ुदा, मज़हब और हलाल–हराम बताते हैं वे सिर्फ़ इन्सान का कमाल और तरक़्क़ी ही चाहते हैं, दीनी आलिमों को छोड़ दूसरों से जुड़ने में मरन है।

इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) ख़ुदा वाले आलिमों से लगाव के सिलसिले में फ़रमाते हैं:–

'झूठ बोलने वाले की एक पहचान यह है कि वह तुम्हें ज़मीन व आसमान की बातें सुनाता है, लेकिन जब उससे हराम व हलाल के बारे में पूछा जाता है तो उसके पास कोई जवाब नहीं होता।'

संयमी और तक़्वे वाले लोगों की भी बहुत सी पहचानें हैं:–

वे हादिसों आपदाओं पर सब्र (धैर्य) करते, हर काम में इस्लामी तौर तरीक़ों का लिहाज़ करते हैं, सदा ख़ुदा को याद रखते हैं, उनकी नियत साफ़, ख़ालिस निर्मल रहती है, उनका अन्तर्मन

(बातिन) साफ़ सुथरा होता है, नेकी से लापरवाही नहीं करते और इस रास्ते पर चलने की नतीजे में वे निश्चिय–ज्ञान (इल्मुलयक़ीन–जानकारी से यक़ीन करना) तक और निश्चय ज्ञान से निश्यन–दर्शन (ऐनुलयक़ीन–देखकर यक़ीन करना) तक और उसके बाद निश्चय–दर्शन से निश्चय–सत्य (हक़्क़ुलयक़ीन–यक़ीन का सत्य) तक पहुँच जाते हैं। **(जारी)**

बक़िया.....................

एक इमाम———दबदबे का नाम

हाथ में जो चीज़ दबी है वह ले ली जाए। उसकी उंगलियों के बीच एक हड्डी थी वह ले ली जाती है और इसे इमाम दफ़न कर देते हैं। अब उससे दुआ करने को कहा जाता है। अब तो घिरी हुई घटाएँ भी छटने लगती हैं। दूर–दूर तक कहीं भी एक बून्द दिखाई नहीं पड़ती। पूछने पर इमाम (अ0) बताते हैं कि यह एक नबी की हड्डी है और ऐसी हड्डी में यह असर होता है कि जब भी यह आसमान के नीचे लायी जाएगी तो रहमत की बारिश ज़रूर होगी। सन्यासी की दुआ का सारा राज़ इमाम (अ0) के ज्ञान ध्यान और सूझबूझ के दबदबे से खुल गया। अब इमाम (अ0) ने दुआ की, पानी बरसा ख़ूब बरसा, सूखा हरन हुआ। लोगों में ईमान निष्ठा का सूखता हुआ बीज फिर से लहलहाती खेती के रूप में लहलहाने लगा।

अब इमाम के दबदबे के आगे बादशाह (मोअ्तमिद अब्बासी) को इमाम को जेल से छोड़ने के अलावा कुछ न बन पड़ा। अब इमाम की शान, दबदबा, जनप्रियता, और मान सम्मान और भी बढ़ गया, बल्कि बढ़ता रहा। इमाम के चाल–चलन की धाक वज़ीरों और राजदरबारियों तक पहुँच चुकी थी। एक ही साल आज़ादी की साँस ले सके कि बादशाह अपनी पुरानी सूरत में आ गया और आपको फिर काल–कोठरी में बन्द कर दिया गया। यह दबदबे के ख़िलाफ़ सरकारी आतंक का एक रूप था। पर काल–कोठरी इमाम (अ0) के किरदार, इबादत, मान सम्मान, शान, साख के दबदबे को कम न कर सकी बल्कि और बढ़ावा ही दे गई। आख़िरकार मोअ्तमिद ने चाल से इसी जेल में इमाम को ज़हर दिलाया। इस तरह खुदाई दबदबे के इस आख़िरी प्रत्यक्ष निशान को दुनिया से मिटा दिया गया।

अब तक के सभी ग्यारह इमाम शहीद हुए, तलवार से या ज़हर से। आख़िरी बारहवें इमाम को खुदा की मसलहत ने ग़ैबत (गोप/अदृश्यता) के पर्दे में रख दिया। जब उसका हुक्म होगा तो ग़ैबत दूर होगी और इमाम (अ0फ0) का ज़हूर होगा और अन्याय, जुल्म से भरी पूरी दुनिया में न्याय, ईमान, धर्म व सत्य का बोलबाला हो जाएगा। अमन चैन, सुख, समृद्धि का राज्य हो जाएगा। दुनिया से बेचैनी, अन्याय, दुख, संकट, जुल्म, ज़ोर ज़बरदस्ती, आतंक, बेईमानी आदि सारी बुराइयाँ दूर हो जाएँगी। ख़ुदाई दबदबे का दबदबा होगा। ख़ुदा करे वह दिन जल्दी आए।

□□□